मुख्यधारा की स्कूली व्यवस्थाओं में नवाचारी आकलन की चुनौतियाँ

mek gfj d|ekj

मुख्यधारा की स्कूली व्यवस्थाएँ या जिन्हें राज्य की शिक्षा सुविधाएँ भी कहा जा सकता है, बच्चों के एक समुदाय को शिक्षा प्रदान करने के आधार का काम करती हैं। ऐसी व्यवस्था की सार्वजनिक प्रकृति का अर्थ होता है कि अलग-अलग पृष्ठभूमियों, धर्मों तथा वर्गों के बच्चे स्वाभाविक रूप से मिलते, जुड़ते हैं और ऐसे वातावरण में, जो भविष्य के वर्षों में रोजगार तथा व्यापक जीवन के माध्यम से स्थिर सिद्ध होगा, साथ-साथ काम करना और पढ़ना-लिखना सीखते हैं।

यदि शाब्दिक रूप से परिभाषित किया जाए, तो नवाचारी आकलन इस प्रकार का कोई भी आकलन हो सकता है जिसमें किसी नई तकनीक या पद्धति का उपयोग किया गया हो। परन्तु, नवाचारी आकलन का आशय इससे कहीं अधिक हो गया है। यह एक ऐसा शब्द है जिसमें विभिन्न तकनीकों और पद्धतियों, जिनमें सभी कोई नई आविष्कार नहीं होतीं, की पूरी शृंखला समाई हुई है। जो उन्हें एक सूत्र में जोड़ता है, वह है एक साझा लक्ष्य : विद्यार्थियों के सीखने की गुणवत्ता को सुधारना। नवाचारी आकलन उस चीज के बारे में भी है जिसे हेरोन (1981) ने 'शैक्षिक शक्ति का पुनर्वितरण' कहा, जब आकलन सिर्फ ऐसी चीज नहीं होती जो सीखने वालों 'पर की जाती है', बल्कि सीखने वालों 'के साथ की जाती है' और सीखने वालों 'के द्वारा की जाती है' [हैरिस एवं बैल, 1990], जैसा कि रोनट्री (1977) ने परिभाषित किया, यह विद्यार्थियों और उनके सीखने की गुणवत्ता को जानने के बारे में होता है।

आकलन की कार्यप्रणाली को सुधारने के लिए की जाने वाली किसी भी पहल के लिए इस समय उपयोग किए जा रहे औपचारिक आकलनों पर गौर करना जरूरी है। सामान्य दृष्टि से आकलन की व्यवस्था में किन्हीं भी परिवर्तनों को शैक्षिक व्यवस्था में व्यापक रूपान्तरण के कार्यक्रम को ध्यान में रखना और उसके प्रमुख भागीदारों, विशेष रूप से शिक्षा विभाग के अधिकारियों तथा शिक्षकों, का सहयोग प्राप्त करना भी बहुत जरूरी है।

इस नवाचारी परिवर्तन का कारगर तरीके से क्रियान्वयन न केवल इस पर निर्भर करता है कि इसका शिक्षा के दूसरे पहलुओं, जैसे पाठ्यक्रम तथा शिक्षण, से कैसे तालमेल बैठता है, बल्कि इस पर भी कि शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च) तथा उसके आन्तरिक ढाँचों का परस्पर कितनी अच्छी तरह सामंजस्य बैठता है। एक आदर्श स्थिति में, वांछित

"सिरफिरे लोगों का अभिनन्दन है। बेमेल लोग, विद्रोही, परेशानी खड़ी करने वाले लोग। चौकोर खानों में गोल खूँटियों की तरह न बैठ पाने वाले लोग। वे लोग जो चीजों को अलग तरह से देखते हैं। उन्हें नियम अच्छे नहीं लगते और वे यथास्थिति का कतई सम्मान नहीं करते। आप उनको उद्धृत कर सकते हैं, उनसे असहमत हो सकते हैं, उनका गुणगान कर सकते हैं या उन्हें बदनाम कर सकते हैं। तकरीबन एक ही बात जो आप नहीं कर सकते, वह है उनकी उपेक्षा करना, क्योंकि वे चीजों को बदलते हैं। वे मनुष्य जाति को आगे धकेलते हैं। हो सकता है कि कुछ लोग उन्हें सनकियों की तरह देखते हों, पर हम उन्हें विलक्षण प्रतिभाशाली लोगों की तरह देखते हैं। क्योंकि जो लोग यह सोचने की हद तक सिरफिरे हों कि वे दुनिया बदल सकते हैं, वे ही वाकई में दुनिया को बदलते हैं।"

-ऐपल इंकॉ.

परिणामों को पैदा करने के लिए एक आकलन व्यवस्था के सभी अंग पूरी तरह से एक-दूसरे से जुड़कर प्रभावी ढंग से काम करेंगे। परन्तु व्यवहार में इसे हासिल करना कठिन है।

सैद्धान्तिक रूप से नवाचारी आकलनों का लक्ष्य सभी प्रत्याशियों के लिए "समान अवसर निर्मित करना" हो सकता है। परन्तु हकीकत में "सीखने के अवसरों में अन्तर" का मतलब होता है कि सभी सीखने वाले समान रूप से सीख कर तैयार नहीं होते और यह असमानता आमतौर पर परिणामों में प्रतिबिम्बित होती है। एक माध्यमिक स्कूल शिक्षिका श्रीमती श्रावणी मुखोपाध्याय कहती हैं कि, "किसी को पास या फेल न करने का सिद्धान्त विविध योग्यताओं वाले बच्चों को स्कूली शिक्षा के उच्चतर प्राथमिक खण्ड में धकेल देता है। ऐसे समूहों के साथ नवाचारी आकलनों को आजमाना बहुत बड़ी चुनौती होता है क्योंकि जब वे इस खण्ड में प्रवेश करते हैं तो वे कहाँ होते हैं, इस बारे में आपको कुछ पता नहीं होता।"

अनेक भाषायी समुदायों से बने हमारे देश को सभी सीखने वालों की जरूरतों को समुचित रूप से पूरा करने के लिए ज्यादा संसाधनों की आवश्यकता होती है। सभी उपकरणों को, किसी समूह के खिलाफ अनुचित पक्षपात के बिना, एक या अधिक भाषाओं में अनुवादित करने की जरूरत होती है, अतिरिक्त विश्लेषणों की आवश्यकता होती है और रिपोर्टों को भी कई भाषाओं में प्रकाशित करना जरूरी होता है। व्यवहार में हो सकता है कि एक ही भाषा इस्तेमाल करने का कोई विकल्प न हो, पर परीक्षण से सम्बन्धित कठिनाइयों में से कुछ को कम करने के तरीके उपलब्ध रहते हैं (देखें हेनेमैन ऐण्ड रैन्सम, 1990)।

अधिकांश नवाचारी प्रयासों में एक "क्रियान्वयन गिरावट" का अनुभव होता है - अर्थात, सुधरने से पहले विद्यार्थियों का प्रदर्शन शुरू में और खराब हो जाता है। प्रायमरी स्कूलों में विद्यार्थियों की उपलब्धियों में सुधार होने में 5 साल जितना लम्बा समय भी लग सकता है और माध्यमिक स्कूलों में यह समय और भी ज्यादा हो सकता है (फुलन, 2001)। नवाचारी आकलनों में काम करने वाले शिक्षकों को, यह समझने के लिए कि कहाँ उन्हें अपनी कार्य पद्धतियों में संशोधन करने की जरूरत हो सकती है, अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी।

यदि स्कूल में आकलन की रचना कक्षाओं के स्तरों पर आधारित होती तो हर कक्षा के आकलन का स्वरूप अलग-अलग होता। वे विषय शिक्षक जो प्रायमरी स्कूल की कक्षा 4 को गणित पढ़ा रहे होते, उन्हें यह पता नहीं होता कि कक्षा 2 के स्तर पर क्या हो रहा होगा। इसलिए, विभिन्न कक्षा स्तरों के बीच में समन्वय महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक प्रतीत होता है। शिक्षिका श्रीमती आलोका माथुर को लगता है कि, "नवाचारी आकलन स्वागत-योग्य हैं, पर हम कक्षा में विद्यार्थियों की बड़ी संख्याओं को कैसे सम्हालें?" मुख्यधारा के स्कूलों में पाया जाने वाला विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात इस कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन में एक बड़ी बाधा है। परीक्षण के काम के भारी बोझ के लिए और विभिन्न रूपों में आँकड़ों को व्यवस्थित रखने के लिए शिक्षकों को अपने-आप को तैयार करना पड़ता है।

हो सकता है कि मानकीकृत नवाचारी परीक्षाएँ सही फीडबैक को प्रतिबिम्बित न करें क्योंकि प्रायमरी के स्तरों पर पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु को शिक्षक के लिए खुला छोड़ दिया जाता है। एक ही कक्षा के अलग-अलग वर्गों में भी बड़ा अन्तर होता है, इसलिए मानकीकृत टैस्ट सही तस्वीर नहीं दर्शाएगा। प्रत्येक शिक्षक अपने पूर्वाग्रहों के अनुसार किसी विद्यार्थी को ग्रेड या अंक दे सकता है। इसलिए विद्यार्थियों का आकलन करने के बारे में आम सहमति बनाने के लिए शिक्षकों का साथ बैठकर इसकी चर्चा करना जरूरी है कि अंक देने के क्या मानदण्ड उनके लिए आवश्यक हैं।

अर्हताप्राप्त तथा अनुभवी शिक्षकों की कमी, साथ ही शिक्षक समुदाय का गिरा हुआ मनोबल तथा उत्साह, इनका भी उन प्रमुख कारकों में उल्लेख किया जा सकता है जिनका सामना नवाचारी व्यवस्थाओं को मार्ग की बाधाओं के रूप में करना पड़ता है। एक कार्यरत शिक्षिका श्रीमती श्रावणी मुखोपाध्याय कहती हैं कि,

"नवाचारी प्रयासों के सफल होने के लिए कारगर शिक्षक विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन बेहद जरूरी है। सबको समाहित करने वाली स्कूली शिक्षा व्यवस्था में, जहाँ नवाचारी कार्यक्रमों को कारगर ढंग से लागू करने में विद्यार्थियों की अलग-अलग पृष्ठभूमि तथा उनकी सीखने की गति शिक्षकों के लिए बहुत बड़ी चुनौती हो सकती है, कुछ नया करना कठिन होता है।" उपयुक्त आकलन पद्धतियों का कक्षाओं में तथा परीक्षा के प्रयोजनों के लिए उपयोग करना शिक्षकों के लिए इन नए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के ध्यान का एक प्रमुख केन्द्र होना चाहिए। "बहुत बार, स्कूलों के नए अकादमिक वर्ष शुरू होने पर उनमें नए शिक्षक शामिल हो जाते थे और हो सकता था कि उनमें से कुछ के पास आकलन की इन नई तकनीकों का पेशेवर ज्ञान और उन्हें उपयोग करने के कौशल न हों। इसलिए, स्कूल को इन नए शिक्षकों को प्रासंगिक अवधारणाओं और कार्यविधियों को अपनाने के लिए पर्याप्त समय देना पड़ता था।"

इस बारे में आम सहमति है कि कम्प्यूटरों, मल्टीमीडिया तथा ब्रॉडबैण्ड संचार नैटवर्कों के एक साथ उपयोग में आ जाने से आकलन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ेगा। हालाँकि, प्रौद्योगिकी-आधारित परीक्षण की सम्भावनाएँ, इसके लिए आवश्यक आधारभूत सुविधाओं के अभाव को देखते हुए, अभी काफी दूर दिखाई देती हैं। प्रौद्योगिक आवश्यकताएँ एक बड़ी अड़चन हो सकती है, खासकर उन स्थानों पर जहाँ इसके लिए जरूरी पेशेवर विशेषज्ञों की सेवाएँ दुर्लभ हैं या हैं ही नहीं। इसके अलावा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि सीखने वालों को अधिक से अधिक लाभ मिले, शिक्षकों को आकलन के उपकरण तथा जानकारी उपलब्ध कराई जाना बेहद जरूरी है। इसमें आकलनों से सम्बन्धित हार्ड और सॉफ्ट (कम्प्यूटर प्रोग्रामों की विधियों) प्रौद्योगिक सुविधाओं के इस्तेमाल तथा व्यवस्था के सफल रूपान्तरण के बीच सन्तुलन बनाए रखना एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है। स्कूलों में ऐसी प्रौद्योगिकी को उपलब्ध कराए जाने की धीमी गति, प्रौद्योगिक संसाधनों की व्यवस्था (उदाहरण के लिए, कम्प्यूटर प्रयोगशालाएँ) करने की दिक्कतें, कमजोर तकनीकी सहयोग और शिक्षकों के लिए उपयुक्त पेशेवर विकास का अभाव, इसमें सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं में शामिल हैं।

जहाँ ऊँचे दाँवों वाली परीक्षाओं का मामला होता है, वहाँ उनके कारण अवांछनीय परिणाम हो सकते हैं, जैसे कि पाठ्यक्रम का सँकरा हो जाना और परीक्षा की तैयारी पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया जाना। यह तब खासतौर से नुकसानदायक होता है जब उद्देश्यों की दृष्टि से विद्यार्थियों में समरूपता नहीं होती। यदि नवाचारी आकलन तथा शिक्षा की व्यवस्थाएँ, दोनों ही कारगर ढंग से काम करती हों, तब भी उनके अनचाहे और शैक्षिक रूप से अनुपयुक्त परिणाम हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, सीखने के न्यूनतम वांछित स्तरों को हासिल करने का एक प्रयास उपयुक्त रूप से बड़े पैमाने के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ प्रारम्भ किया गया परन्तु, कुछ ही वर्षों में शोधकर्ताओं ने पाया कि शिक्षक केवल परीक्षा के लिए पढ़ा रहे थे (गोविन्दा, 1998)। गोविन्दा (1998) टिप्पणी करते हैं कि इसके अन्य नकारात्मक परिणाम भी हुए, क्योंकि कुल मिलाकर कार्यक्रम का प्रभाव रटकर सीखने का तथा "प्रेषणवादी" शिक्षण विधियों को मजबूत करना था, और इसने स्कूल-पश्चात की परीक्षाओं की तैयारी का एक बड़ा उद्योग पैदा करने में सहायता की जिसने अपेक्षाकृत ज्यादा गरीब पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों के खिलाफ पक्षपात को बढ़ाने का काम किया।

"नवाचारी पहल - कोई भी नया विचार - परिभाषा के ही अनुसार आरम्भ में स्वीकार नहीं किया जाएगा। किसी संगठन के द्वारा किसी नवाचारी पहल को स्वीकार किए जाने और आत्मसात किए जाने से पहले बारम्बार प्रयासों, अन्तहीन प्रदर्शनों और उबाने वाले एकरस पूर्वाभ्यासों का सतत सिलसिला बनाए रखना पड़ता है। इसके लिए साहसपूर्ण धैर्य की आवश्यकता होती है।" - वारेन बेनिस

जैसा कि नोहा एवं एकस्टीन ने कहा (1992), परीक्षाओं में परिवर्तनों को शिक्षा तथा समाज में बदलाव के लिए, पाठ्यक्रम को सुधारने के लिए, व्यवस्था में प्रभावी नियंत्रण को केन्द्र से दूर - या उसकी ओर - खिसकाने

के लिए और निश्चित राजनैतिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए लीवरों की तरह उपयोग किया जाता है।

नवाचारी आकलन को समीक्षात्मक सोच, जिसमें स्वयं का समीक्षक होना भी शामिल है, विकसित करने के लिए निर्मित किया जाता है। नवाचारी आकलन की तकनीकें भी समस्याओं से रहित नहीं होतीं और यदि उन्हें 'प्रसिद्ध असफलता' के ठप्पे से बचना है, तो निश्चित रूप से उनके सावधानीपूर्वक क्रियान्वयन की आवश्यकता होती है। परन्तु हम जिस तरह आकलन करते हैं उसे बदलने के पक्ष में जो तर्क हैं वे सम्भावित समस्याओं की तुलना में कहीं ज्यादा भारी पड़ते हैं। आकलन के प्रति नवाचारी दृष्टिकोण प्रमुख रूप से विद्यार्थियों के सीखने की गुणवत्ता को सुधारने के प्रयोजन से उपजा है और हमारे लिए चुनौती उसे आकलन की तरह न देखकर सिखाने-सीखने की प्रक्रिया के अविभाज्य अंग की तरह देखने की है।

उमा *वर्तमान में बंगलौर में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की बाह्य सलाहकार के रूप में काम कर रही हैं। वे 25 वर्षों के शिक्षण अनुभव लेकर 2003 में फाउण्डेशन के साथ जुड़ीं। इससे पहले, उन्होंने शिक्षक के रूप में सोफिया हाई स्कूल तथा केन्द्रीय विद्यालय संगठन में काम किया है। उनसे uma.harikumar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद*** *: सत्येन्द्र त्रिपाठी*